DADASAHEB JOTIRAM GODASE Rajdhani Arts College Vaduj

NAME : KALE OMKAR KISAN

CLASS - BA III

SUB - HINDI

विधा विशेष का अध्ययन

प्रकल्प कार्य - Project Work

सन 2022-23

ROLL NO 334.

SUB - TECHER : PROF SABALE B.J.

YEAR - 2022-23.

Score - 8/10

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

नं	नाव	
1)	प्रस्तावना	
2)	सारांश	
3)	उद्देश्य	
4)	विषय विवरण	
5)	निष्कर्ष	

Scanned with CamScanner

* प्रस्तावना :-

हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका चंद्रकांता जी का पहला उपन्यास है - अंतिम साक्ष्य जिसका द्वितीय संस्करण सन 2015 ई. में अमन प्रकाशन की ओर से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में बदलते मानवीय संबंधों की संवेदना तथा प्रेम - संबंधोंकी आकांक्षा को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

आधुनिक सभ्यता के प्रभाव एवं परिणामों से आत्मीकता की जगह औपचारीकनाका प्रचालन बढ़ता गया। और संयुक्त परिवारों का जन्म हुआ। व्यक्ती अपने ही स्वजनों से कटकर रिश्तों की निर्जीवता, अर्थहीनता की बढ़ता देने लगा।

चंद्रकांता जी ने प्रस्तुत कथनाक को पारिवारिक व्यवस्था के बदलते प्रतिरूपों का आधार बनकर स्नेह, अपनापन, विश्वास, आस्था आदि भाव - भावनाओं के माध्यम से रिश्तों की गहराई और उथलेपन से को भी अत्यंत कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है।

समीक्षकों के अनुसार अंतिम

Scanned with CamScanner

साक्ष्य उपन्यास जितना सामाजिकता से अपना सरोकार दर्शाता है। उतना ही व्यक्तिवाद और पारिवारिकता से गहरा संबंध भी निर्माण करता है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु मीना मौसी के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है। जिससे इसे नायिका प्रधान उपन्यास की कोटी में रखा जा सकता है अथवा स्त्री-विमर्श के रूप में देखा जा सकता है।

Page :
Date : / /

* सारांश :-

- यह उपन्यास हमारे देश की बदलती परिस्थितियों का लेखा - जोखा है।
- इस उपन्यास में कश्मीरी संस्कृति के साथ - साथ आधुनिक सभ्यता का भी चित्रण किया है।
- पारिवारीक संबंधों में बंधे मनुष्य की स्त्री आकर्षण से बनी मानसिक उथल - पुथल को लेखिका ने यहा अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है।
- भावनाओं मे बहकर निर्णय लेने की मनुष्य की प्रवृत्ती के परिणामों ने पारिवारीक व्यवस्था को खतरे के कगार पर लाकर खडा करने तथा परिवार बिखराव की समस्या का चित्रण किया है।
- स्त्रियों के प्रति समाज एवं परिवार की नकारात्मक सोच एवं अनेक शोषण

Scanned with CamScanner

Page :
Date : / /

- का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास करता है।

- इस उपन्यास में बीजी के चारित्र के माध्यम से भारतीय नारी के पारंपारिक स्थिती का चित्रण किया गया है।

- यह उपन्यास स्त्री विमर्श के साथ-साथ परिवार विमर्श की भी हिमालय करता दिखाई देता है।

- यह कथा युवाओं के उन्मुक्त आचरण और व्यवहार से उनके गिरते स्तर का यथार्थ चित्रण करता है।

- यह उपन्यास स्त्री-पुरुष के संबंधों का सुक्ष्म रेखांकन है। आज से आधुनिक युग में विवाह पूर्व और विवाहेत्तर संबंध स्थापित हो रहे है। अनैतिक तथा अवैध संबधो के बढते प्रचलन से उत्पन्न तनावपूर्ण स्थितियों का परिचय यथार्थक के साथ किया है।

Scanned with CamScanner

Page :
Date : / /

* उद्देश :-

1) उपन्यास विधा में प्रचलित लघु उपन्यास से परिचित होंगे।

2) हिंदी साहित्य में चर्चित नारी विमर्श तथा परिवार विमर्श की जानकारी से परिचित होंगे।

3) स्वतंत्र भारत की सामाजिक, पारिवारिक व्यवस्था का परिचय प्राप्त होगा।

4) व्यक्ति के आचरण और व्यवहार के विभिन्न पहलुओं की जानकारी से परिचित होंगे।

5) कश्मीरी हिंदू परिवार मे नारी की स्थिती से परिचित होंगे।

6) स्त्री-पुरुष के बदलते संबंधों की जानकारी से परिचित होंगे।

Scanned with CamScanner

Page:
Date: / /

7) बिखरते परिवार में पति के तथा मुखिया के अनैतिक आचरण से परिवार बिखरने की पीड़ा से परिचित होंगे।

8) बिखरते परिवार और विस्थापित लोग आदि के माध्यम से मनुष्य की आंदोलित मनोदशा से परिचित होंगे।

9) भारतीय नारी के विषय में समाज के संकीर्ण वैचारिक दृष्टिकोण की जानकारी से परिचित होंगे।

10) परिवार में उभरते अविश्वास और नयी पीढ़ी अलगाव की व्यथा से परिचित होंगे।

Scanned with CamScanner

* विषय विवरण :-

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की कथावस्तु :

'अंतिम साक्ष्य' की कथा मीना नाम की एक छोटी सी लड़की की है जो आगे चलकर मीना मौसी नाम से जानी जाती है। माता-पिता के अभाव में बालिका मि-मीना को चाचा-चाची संरक्षण देते है लेकिन उन्हे मीना को संभालने की इच्छा न थी, समाज के भय से उन्होंने मीना को अपने घर में रखा था। बारह साल की उम्र में मीना का एक पचास साल के बुढ़े लाल से जबरदस्ती विवाह किया जाता है। बूढे लाल की पहली पत्नी का देहांत हुआ है तथा उनके तीन-तीन जवान बेटे भी हैं। बुढा लाला शादी के बाद मीना को देखता है तो उसे अपराध बोध होता है। लाल के मन में दयाभाव जागृत होता है। उसे मालूम है उसके जवान बेटे मीना को माँ नहीं मानेंगे तथा उनकी

Scanned with CamScanner

शिद्दत दृष्टि का लाला को अर्थ बनाना है। मीना के विषय में बूढ़ा लाला अस्वस्थ और आतंकित होता रहता है। स्त्री को भोगने की लपलपाती भूख ने उसके दिमाग पर पर्दा डाला था। स्त्री का शरीर केवल भोगने के लिए होता है। इस जिद के कारण लाला ने शादी के लिए तुरंत स्वीकृती दी थी लेकीन मीना के चेहरे की मासूमियतता तथा उसकी उसकी उम्र ने लाला का डराया। शादी के दोन दिन बाद ही बूढा लाला मीना के चाचा के घर जाकर मीनू को लौटाने की बात करता है।

मीनू के चाचा के घर की बागडोर चाची के हाथ मे थी। और चाचा केवल मूक दर्शक थे। बूढ़ा लाला मीनू का ब्याह करी और करने की बात करते हुए कहते है कि पोती की उम्र की लडकी को घर मे न रखूंगा। चाची को इस बात का क्रोध आता है। और वह लाला को इस बात का क्रोध आता है। और वह लाला को होश मे आने की बात कहती है। लाला भी अपराधबोध की भावना से स्वयं को संभालकर चाची पर मीना की

Page :
Date : / /

उम्र बारह की जगह बीस बताकर फसाने का आरोप लगता है। चाची भी इतनी सहजता से मीना को वापस हार में लेने के लिए तैयार न थी। लाला चाची के चेहरे पर उत्पन्न पैसों की भूख का नशा और सौदेबाजी का इरादा पहचानता है। चाची मुंह पर झूठा क्रोध और दुःख का मिला-जुला भाव लेकर पांच हजार नकद रकम लेकर राजी होती है।

मीनू की उम्र इस योग्य न थी जो इस लेनदेन के 'व्यवहार' को समझ सके। चाची के घर जाते समय लाला का छोटा लड़का मीनू के सामने 'हवस' का प्रस्ताव रखता है। इस घटना से मीनू को क्रोध नहीं आता पर अपने जान छिड़कने वाले उसके बापू (पिताजी) का चेहरा उसका प्रेम वह नहीं भूली थी। ईश्वर ने शायद मीनू को बचपन से ही माता-पिता के अभाव में ही मीनू को अनुभव प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner